फंका करना — नष्ट करना।

फंका मारना — फांकना।

फंदा छुड़ाना — कैद से रिहा करना।

फंदा देना — गांठ देना। फंदा लगाना।

(किसी पर) फंदा पड़ना — रचा हुआ प्रपंच सफल होना।

फंदा मारना — जाल में फंसाना।

फंदा लगना — जाल फैलना। ढंग लगना। धोखा चल जाना।

फंदा लगाना — जाल फैलाना। किसी को अपनी चाल में लाने का प्रयत्न करना। धोखा देना। गांठ लगाकर फंदा तैयार करना।

फंदे में आना — जाल में फंसना।

फंदे में पड़ना — धोखे में पड़ना। जाल में फंसना। वशीभूत होना।

फंदे में लाना — जाल में लाना। फरेब में लाना।

फक कराना — छुड़ाना।

(रंग) फक पड़ जाना — डर के मारे स्तब्ध हो जाना, अत्यधिक घबड़ा जाना। विवर्ण हो जाना।

(रंग) फक हो जाना — डर के मारे स्तब्ध हो जाना, अत्यधिक घबड़ा जाना। विवर्ण हो जाना।

फक — बन्धन से मुक्त होना।

फक्कड़ तौलना — गाली बकना। कुवाच्य कहना।

फ़कीर का घर बड़ा है — फकीर को अपनी शक्ति से सब कुछ प्राप्त है।

फ़कीर की सदा — वह आवाज जो फकीर मांगने के समय देते हैं।

फगुवा खेलना — होली के उत्सव में रंग गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना। उ०- बन घन फूले टेसुवा बगियन बेलि। चले विदेस पियरवा फगुवा खेलि। रहीम।

**फगुवा मनाना** — फागुन मै स्त्री पुरुषों का परस्पर मिलकर रंग खेलना और गुलाल मलना आदि। उ०- खेलत बसंत राजाधिराज देखत नभ कौतुक सुर समाज। नुपूर किंकिन पुनि मति सुहाइ। ललनागन जब गहि धरहि धाइ। लोचन आंजहिं फगुवा मनाइ। छाड़हिं नचाइ हा हा कराइ। तुलसी।

**फजीलत की पगड़ी** — श्रेष्ठता सूचक पदक या चिन्ह।

**फट पड़ना** — अचानक आ पहुंचना। सहसा आ पड़ना।

**फट से** — तुरन्त। शीघ्र।

**फटकना पछोरना** — सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना। उ०- मूंग मसूर उरद चना दारी। कनक बरन धरि फटक पछारी। सूर। अच्छी तरह जांच पड़ताल करना। ठोंकना बजाना। जांचना। परखना। उ०-(क) ऊधो तुम सब साथी भोरे। मेरे कहे बिलगि मानौगे कोटि कुटिल ले जोरे। वे अक्रूर क्रूर कृत जिनके, रीते भरे भरे गहि ढोरे। आपुनि श्याम, श्याम अंतर मन श्याम काम को बोरे। तुम मधुकर निर्गुण निज नीके देखे फटकि पछोरे। सूरदास कारण के संगी कहा पाइयत गोरे। सूर। (ख) देश देश हम बागिया ग्राम ग्राम की खोरि। ऐसा जियरा ना मिला जो लेइ फटकि पछोरि। कबीर। सूर जहां जो श्याम गात है देखे फटकि पछोरे। सूर०।

**फटकार खाना** — तड़फना। फतड़फड़ाना।

**फटफट होना** — तकरार होना। कहा सुनी होना।

**(किसी के) फटे मै पांव बढ़ाना** — जान बूझकर किसी झगड़े मै पड़ना। किसी की बला अपने सिर लेना।

**(किसी के) फटे मै पांव देना** — जान बूझकर किसी के झगड़े मै पड़ना। दूसरे की आपत्ति को अपने ऊपर लेना।

**फट्ठा उलटना** — दिवाला निकालना। टाट उलटना।

**फट्ठा लौटना** — दिवाला निकालना। टाट उलटना।

**फड़ पाना** — जीतना। बाजी मारना।

| | |
|---|---|
| फड़ रखना | दांव लगाना। |
| फड़ लगाना | दांव लगाना। |
| फड़क उठना | उमंग में होना। आनन्दित होना। प्रसन्न होना। |
| फड़क जाना | मुग्ध होना। |
| ~~(दिल के)फफोले फोड़ना~~ | ~~जली-कटी सुनाना।~~ |
| फबती उड़ाना | हंसी उड़ाना। चुटीली बात कहना। चुटकी लेना। |
| फबती कसना | चुभती हुई पर हंसी की बात कहना। हास्यपूर्ण व्यंग्य कहना। हंसी उड़ाते हुए चुटकी लेना। व्यंग्यपूर्ण बात कहना। |
| फरक फरक होना | `दूर हो` या `राह छोड़ो` की आवाज होना। `हटो बचो` होना। उ०- चल्यो राजमंदिर की ओरा। फरक फरक माच्यो मग सोरा। रघुराज। |
| (घड़ी का)फरक होना | चाल जितनी चाहिए उससे तेज होना। सुई का आगे का समय बताना। |
| फ़रज़ी बनना | पैदल का वज़ीर के खाने में पहुंचकर वजीर बन जाना। |
| फरना फूलना | सफल मनोरथ होना। उ०- गोद कली सम विगसी ऋतु बसंत और फाग। फूलहु फरहु सदा सुख सफल सुहाग। । जायसी । |
| फरमा देना | चेस में कसकर मैटर को छापने के लिए तैयार कर देना। |
| फ़रागत करना | समाप्त करना। पूरा करना। |
| फ़रागत जाना | टट्टी जाना। |
| फ़रागत पाना | छुटकारा पाना। निश्चिन्त होना। |
| फ़रागत होना | छुटकारा पाना। निश्चिन्त होना। |
| फ़रियादी होना | नालिश-फरियाद करना। |
| फ़र्ज़ अदा करना | कर्तव्य का पालन करना। |
| फ़र्ज़ करना | मानना। कल्पना करना। |

| | |
|---|---|
| (किसी पर)फ़र्ज़ होना | अवश्य कर्तव्य होना। धर्म होना। |
| फ़र्श ज़मीं होना | मरना। दफन होना। |
| फर्शी सलाम | जमीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम। |
| फरांटा मरना | वेग से दौड़ना। तेजी से दौड़ना। |
| फरांटा मारना | वेग से दौड़ना। तेजी से दौड़ना। |
| फल आना | छोटे छोटे दानों का निकल आना। |
| फल जाना | छोटे छोटे दानों का निकल आना। |
| फ़लक टूटना | आसमान। |
| फलक पर चढ़ना | आसमान। |
| फलक पर चढ़ाना | आसमान। |
| फलक पर याद आना | जमाने के उलट-फेर याद आना। |
| फलना फूलना | फलयुक्त होना। बाल बच्चोंवाला होना। सुख-सौभाग्य युक्त होना। |
| फलीता दिखाना | आग लगाना। बन्दूक या तोप को दागना। |
| फलीता सुंघाना | ताबीज या यंत्र की धूनी देना। |
| फ़साद का घर | झगड़े की जड़। |
| फस्द खोलना | नस से रक्त निकालना। रग पर नस्तर देना। |
| फस्द खुलवाना | शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। पागलपन की चिकित्सा करवाना। होश की दवा कराना। |
| फस्द लेना | शरीर का दूषित रक्त निकालना। पागलपन की चिकित्सा कराना। रग पर नस्तर देना। |
| फांड़ा कसना | किसी काम के लिए मुस्तैद होना। |
| फांड़ा पकड़ना | इस प्रकार पकड़ना जिसमें कोई मनुष्य भागने न पाये। स्त्री का किसी पुरुष को अपने भरण पोषण के लिए जिम्मेदार ठहराना। |
| फांड़ा बांधना | किसी काम के लिए मुस्तैद होना। |

फांस चुभना — जी में खटकनेवाली बात होना। कसकनेवाली बात होना। ऐसी बात होना जिससे चित्त को दु:ख पहुंचे।

फांस निकलना — कंटक दूर होना। ऐसी वस्तु या व्यक्ति का न रह जाना जिससे दु:ख या खटका हो।

फांस निकालना — कंटक दूर करना। ऐसी वस्तु या व्यक्ति को दूर करना जिससे कुछ कष्ट या किसी बात का खटका हो।

फांसी खड़ी होना — फांसी दिये जाने की तैयारी होना। प्राण जाने का डर होना। डर की बात होना।

फांसी चढ़ना — प्राण दण्ड पाना।

फांसी चढ़ाना — प्राण दण्ड देना।

फांसी देना — प्राण दण्ड देना।

फांसी पड़ना — फांसी की सजा पाना।

फांसी लगना — फंदे से गला कसना।

फाइल करना — नत्थी करना। मिसिल में शामिल करना।

फाका पड़ना — उपवास होना।

फाकों का मारा — भोजन न मिलने से अत्यन्त शिथिल। भूख से मरता हुआ।

फाकों मरना — भूखों मरना। उपवास का कष्ट सहना।

फाड़ खाना — क्रोध से फल्लाना। बिगड़ना। चिड़चिड़ाना।

फातिहा पढ़ना — निराश होना।

फाफा कुटनी — इधर उधर करनेवाली स्त्री। बुढ़िया जो कुटपन करती या इधर उधर करती हो।

फारसी बघारना — वे मौके फारसीदानी दिखाने के लिए फारसी बोलना।

फाल भरना — कदम रखना। डग भरना।

| | |
|---|---|
| फाल बांधना | छलांग मारना।कूदकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।उछलकर लांघना।उ०- कहै पद्माकर त्यौं हुंकरत,फुंकरत,फैलत फलात,फाल बांधत फलंका मैं। पद्माकर। |
| फालिज गिरना | अधरंग होना।अंग सुन्न पड़ जाना। |
| फालिज मारना | फालिज की बीमारी होना। |
| फालुनी बजाना | खोदकर गिराना,ढाना। |
| फावड़ा चलाना | खेत में काम करना। |
| फावड़ा चलना | खुदाई होना।खुदना।ध्वस्त होना। |
| फावड़ा बजाना | खोदना।खोदकर ढाना या गिराना। |
| (परदा)फ़ाश करना | गुप्त बात प्रकट कर देना। |
| फिक्र लगना | ऐसा ध्यान बना रहना कि चित्त अस्थिर रहे।ख्याल या खटका बना रहना। |
| फिकरा कसना | व्यंग्य वाक्य कहना।ताना मारना। |
| फ़िकरा चल जाना | धोखा देने के लिए कही हुई बात का अभीष्ट फल होना।चकमे का काम कर जाना। |
| फ़िकरा चलाना | धोखा देने के लिए कोई बात बनाकर कहना। |
| फ़िकरा चुस्त करना | दिल से कोई मौजूं बात जोड़कर कहना। |
| फ़िकरा तराशना | धोखा देने के लिए कोई बात गढ़कर कहना। |
| फ़िकरा देना | झांसा देना।दम बुत्ता देना। |
| फ़िकरा बताना | झांसा देना।दम बुत्ता देना।धोखा देना। |
| फ़िकरा बनाना | धोखा देने के लिए कोई बात गढ़कर कहना। |
| फ़िकरे कहना | व्यंग्यपूर्ण बात कहना।बोली बोलना।आवाजा कसना। |
| फ़िकरे पढ़ना | आवाजा कसना। |
| फ़िकरे ढालना | व्यंग्यपूर्ण बात कहना।बोली बोलना।आवाजा कसना। |

फ़िक़रे सुनाना — व्यंग्यपूर्ण बात कहना। बोली बोलना। आवाजा कसना।

(मुंह या चेहरे पर) फिटकार बरसना — चेहरे का मलिन, उतरा हुआ होना।

फिटकार लगाना — शाप देना। शाप ठीक उतरना।

फिट्टा मुंह — उतरा या फीका पड़ा हुआ चेहरा।

फितना जगाना — मिटे हुए झगड़े को फिर उठाना।

फ़िदा होना — आशिक होना। किसी के लिए जान देना।

फ़िरिश्ता दिखाई देना — मौत करीब होना।

फ़िरिश्ता नज़र आना — मौत करीब होना।

फ़िरिश्ते का कान में फूंकना — घमंडी होना।

फ़िरिश्ते का गुज़र न होना — किसी की पहुंच न होना।

फ़िरिश्ते की दाल न गलना — किसी की पहुंच न होना।

फ़िरिश्तों को ख़बर न होना — नितान्त गुप्त होना।

फिर क्या है ? — तब क्या पूछना है। तब तो किसी बात की कसर ही नहीं है। तब तो कोई अड़चन ही नहीं है। तब तो सब बात बनी बनायी है।

फिर पड़ना — विरुद्ध होना। कुद होना। बिगड़ना।

फिराक में रहना — खोज में रहना। फिक्र या तलाश में रहना।

फिस हो जाना — हवा हो जाना। कुछ न रह जाना। बेकार सिद्ध होना।

फुई ताल मरता है — थोड़ा थोड़ा करके बहुत हो जाता है।

फुरसत पाना — बरखास्त होना। छुटकारा पाना।

फुरसत से — अवकाश में। धीरे धीरे।

फुरहरी आना — फुरफरी होना। सर्दी, डर आदि के कारण कंपकंपी होना।

फुरहरी लेना

फुरैरी लेना — उड़ने के लिए पंख हिलाना। कांपना। कंप के साथ रोमांस होना। सतर्क हो जाना। कांपना थरथराना। उ०- नहिं बन्हाय नहिं जाय घर चित चिहुट्यो तकि तीर। परसि फुरहरि लै फिरति, विहंसति धंसति न नीर। बिहारी। फड़फड़ाना। फड़कना। हिलना।

फुस फुस करना — सुनाई न देनेवाले स्वर में बोलना।

फुस से — बहुत धीमी आवाज से। चुपके से।

फूंक कर पैर रखना — बहुत बचाकर काम करना। कुछ करते हुए इस बात का बहुत ध्यान रखना कि कोई ऐसी बात न हो जाय जिससे कोई हानि या बुराई हो। बहुत सावधानी रखना।

फूंक निकल जाना — दम निकल जाना। प्राण निकल जाना। मर जाना।

फूंक फूंक कर पांव। कदम रखना — बचा बचा कर चलना। बहुत बचाकर कोई काम करना। बहुत सावधानी से कोई काम करना।

फूंक मारना — जोर से मुंह की हवा छोड़ना। फूंकना।

फूंक ताप डालना — उड़ा देना। बरबाद कर देना।

फूंक सा — बहुत कमजोर, दुबला पतला (आदमी)।

फूंकना तापना — व्यर्थ खर्च करके धन नष्ट करना।

फूट डालना — भेद डालना। भेद भाव या विरोध उत्पन्न करना। झगड़ा कराना। उ०- नारद ह्वै ये बड़े सयाने घर घर डालत फूट। सूर ॥

फूट पड़ना — फूट पैदा होना।

फूट फूट कर रोना — बिलख बिलख कर रोना। बहुत विलाप करना।

फूट सा खिलना — पक कर हंसता होकर दरकना।

फूटहरा फूटना — खूब जोरों की हंसी होना। ठहाका लगाना (व्यंग्य)

फूटी आंख का तारा — कई बेटों में एक बचा हुआ बेटा। बहुत प्यारा लड़का

फ़ूटी आंखों न देख सकना — बुरा मानना। देखकर जलना। कुढ़ना। देखना भी सह्य न होना।

फ़ूटी आंखों न भाना — तनिक भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। अत्यन्त अप्रिय लगना।

फ़ूटी कौड़ी (पास में) न होना — कुछ न होना।

फ़ूटे मुंह बात न करना — बिलकुल ही उपेक्षा करना। एक बात भी न करना।

फ़ूटे मुंह से न बोलना — एक बात भी न करना। अत्यन्त उपेक्षा करना।

फ़ूल आना — फ़ूल लगना।

फ़ूल उतारना — फ़ूल तोड़ना। फ़ूल चुनना।

फ़ूलकर कुप्पा हो जाना — मोटाना। हृष्ट पुष्ट होना। अत्यन्त गर्वित होना। आनन्द से फ़ूल जाना। अत्यधिक गर्व होना।

फ़ूल करना — बुझाना (चिरागको)।

फ़ूल चुनना — फ़ूल तोड़कर इकट्ठा करना।

फ़ूल झड़ना — मुंह से प्रिय और मधुर बातें निकलना। उ०- झरत फ़ूल मुंह से बहि केरी। जायसी।

फ़ूल पड़ना — बत्ती के मुंह पर गुल बनना।

फ़ूल भेजना — फ़ूलों के संकेत द्वारा प्रेमी-प्रेमिका का एक दूसरे को संदेसा भेजना।

फ़ूल लोढ़ना — फ़ूल चुनना।

फ़ूल सा — अत्यन्त सुकुमार, हलका या सुन्दर।

फ़ूल सूंघकर रहना — बहुत कम खाना। अल्पहारी होना।

फ़ूलना फलना — धन, धान्य, सन्तति आदि से पूर्ण और प्रसन्न रहना। उन्नति करना। उ०- फ़ूलौ फरौ रहौ जहां जाही यहि असीस हमारी। सूर।

फ़ूलना फालना — प्रफ़ुल्ल होना। उल्लास में रहना। प्रसन्न होना। ए उ०- फ़ूली फाली फ़ूल सी फिरती विमल

विहाय।मोर तोया होयंगी भला तोहि प्रिय पाय। । बिहारी ।

**फूला फूला फिरना** — गर्व करते हुए घूमना।घमंड में रहना।उ०- फूला फूला फिरै कहै जो करता धर्म।कोटि करम सिर पर चढ़े चेति न देखै मर्म। कबीर ।आनन्द में मग्न होकर विचरना।

**फूलों का गहना** — फूलों की माला,हार आदि का सिंगार या सजावट का सामान।ऐसी नाजुक और कमजोर चीज जो थोड़ी देर की शोभा के लिए हो।

**फूलों की छड़ी** — वह छड़ी जिसमें फूलों की माला लपेटी रहती है और जिससे चौथी खेलते हैं।

**फूलों की सेज** — आनन्द की सेज।

**फूलों के सेज पर सोना** — सुख-चैन की जिन्दगी बसर करना।

**फूलों के कांटे में तुलना** — बहुत सुकुमार होना।राजसिक सुख भोगना।

**फूले न समाना** — अत्यन्त आनन्दित होना।उ०-(क) स्यामंतक मणि जांबवती सह आए द्वारिका नाथ।अति आनन्द कोलाहल घर घर फूले अंग न समात। सूर ।(ख) उठा फूलि अंग नाहिं समाना।कंथा टूक टूक भहराना। जायसी ।

**फूले फूले फिरना** — आनन्द में रहना।बहुत प्रसन्न होकर घूमना।उ०- (क) जसुमति रानी देत बधाई भूषन रतन अपार। फूली फिरति रोहिणी मैया नखसिख किए सिंगार। सूर ।(ख)आजु दशरथ के आंगन भीर।---- फूले फिरत अयोध्यावासी गनत न त्यागत चीर। परिरंभन हंसि देत परस्पर आनन्द नैनन नीर। सूर । (ग) फूले फूले फिरत है आज हमारो व्याह। (प्रचलित)

**फेंट कसना** — कटिबद्ध होना।कमर कसकर तैयार होना।सन्नद्ध होना।उ०- ढोल बजावती गावती गीत मचावती धूंधुर धूरि के धारन।फेंट कसी की करी द्विजदेव

| | |
|---|---|
| | ब्र चंचला बस चंचल तारन। द्विजदेव । |
| फेट धरना | जाने न देना। जाने से रोकना। इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पाये। उ०- अब लौं तो तुम बिरद बुलायो भई न मोसों भेंट। तजौ बिरद कै मोहि उबारो सूर गही कसि फेंट। सूर । |
| फेट पकड़ना | जाने न देना। जाने से रोकना। इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पाये। उ०- जौ तुम राम नाम चित धरतो। अब कौ जन्म आगिलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतो। —सूरदास बैकुंठ पैठ मै कोउ न फेट पकरतो। सूर । |
| फेट बांधना | कटिबद्ध होना। कमर कसकर तैयार होना। सन्नद्ध होना। उ०- पाग पेच खैच दे, लपेटि पट फेटि बांधि, ऐड़ि ऐड़े आवैं पैने टूटे डीम डीम ते। हनुमान । |
| फेफड़ी पड़ना | ओठ सूखना। |
| फेफड़ी बांधना | ओठ सूखना। |
| फेर की बात | घुमाव की बात। बात जो सीधी सादी न हो। |
| फेर खाना | घुमाव के रास्ते जाना। सीधा न आकर इधर उधर घूमकर अधिक चलना। चक्कर काटना। |
| फेर देना | घुमाना। मोड़ना। रूख बदलना। |
| फेर पड़ना | घुमाव का रास्ता पड़ना। सीधा न पड़ना। |
| फेर बंधना | क्रम या तार बंधना। सिलसिला लगना। |
| फेर बांधना | सिलसिला डालना। तार बांधना। |
| फेर मै आना | धोखा खाना। |
| फेर मै डालना | असमंजस मै डालना। अनिश्चय किंकर्तव्य विमूढ़ करना। |
| फेर मै पड़ना | असमंजस मै होना। कठिनाई मै पड़ना। हानि उठाना। घाटा सहना। धोखा खाना। |
| फेर लाना | उपाय या ढंग रचना। युक्ति लगाना। |
| फेरफार की बात | चालाकी की बात। |

| | |
|---|---|
| फेरी पड़ना | भाँवर होना। विवाह के समय वर कन्या का साथ साथ मंडप स्तम्भ की परिक्रमा करना। |
| फेरि फेरि | बार बार। उ०- हरै हरै हेरि हेरि हँसि हँसि फेरि फेरि कहत कहा नीकी लगत। देव। |
| फैज को पहुँचना | अपने कर्म का उचित फल पाना। |
| फैसला सुनाना | मुकदमे का निर्णय सुनाना। |
| फोकट का | बिना परिश्रम का। बिना मूल्य का। मुफ्त। |
| फोकट में | बिना श्रम और व्यय के। मुफ्त में। यों ही। |